

**Living With The Right Attitude**

Jesus The Christ - (# 3)

August 15, 2021

**TEXT:** Matthew 5:1-12

**KEY VERSE:** Matthew 5:2-3

**Matthew 5:2-3** 2 And he opened his mouth, and taught them, saying,

3 Blessed are the poor in spirit: for theirs is the kingdom of heaven.

As we grow in God's Word,  
may we learn to live God's Word.

1) \_\_\_\_\_.

2) \_\_\_\_\_.

3) \_\_\_\_\_.

**Text:**  
**Matthew 5:1-12**

**Key Verse:**  
**Matthew 5:2-3**

4

1

---

---

---

---

---

---

---

---

**KEY VERSE:**

**2 And he opened his mouth,  
and taught them, saying,  
3 Blessed *are* the poor in  
spirit: for theirs is the  
kingdom of heaven.  
(Matthew 5:2-3)**

5

2

---

---

---

---

---

---

---

---

**There is more to living for God  
then just living  
and saying you are a Christian.**

6

3

---

---

---

---

---

---

---

---

**LIVING WITH  
THE RIGHT ATTITUDE  
JESUS THE CHRIST – (# 3)**

4

---

---

---

---

---

---

---

---

**My attitude should  
emanate the love of God.**

8

5

---

---

---

---

---

---

---

---

**As we grow in God's Word,  
may we learn to live God's Word.**

9

6

---

---

---

---

---

---

---

---

**1) Humility.**

7

---

---

---

---

---

---

---

---

**Blessed *are* the meek:  
for they shall inherit the earth.  
(Matthew 5:5)**

8

---

---

---

---

---

---

---

---

**These anointed maxims  
give us the characteristics  
of a righteous person.**

9

---

---

---

---

---

---

---

---

**Bring forth therefore fruits  
meet for repentance:  
(Matthew 3:8)**

43

10

---

---

---

---

---

---

---

---

**True repentance is a change  
of heart and behavior.**

44

11

---

---

---

---

---

---

---

---

**Even so faith,  
if it hath not works,  
is dead, being alone.  
(James 2:17)**

45

12

---

---

---

---

---

---

---

---

**KEY VERSE:**

**Blessed *are* the poor in  
spirit: for theirs is the  
kingdom of heaven.  
(Matthew 5:3)**

46

13

---

---

---

---

---

---

---

---

**Realizing that we are  
totally dependent upon God  
for everything,  
humbles our heart.**

47

14

---

---

---

---

---

---

---

---

**8 For by grace are ye saved  
through faith;  
and that not of yourselves:  
*it is* the gift of God:  
9 Not of works,  
lest any man should boast.  
(Ephesians 2:8-9)**

48

15

---

---

---

---

---

---

---

---

**The fear of the LORD  
is the beginning of wisdom:  
and the knowledge of the holy  
is understanding.  
(Proverbs 9:10)**

49

16

---

---

---

---

---

---

---

---

- 1) Humility.**
- 2) Spirituality.**

4:

17

---

---

---

---

---

---

---

---

**Blessed *are* the pure in heart:  
for they shall see God.  
(Matthew 5:8)**

4:

18

---

---

---

---

---

---

---

---

**Spiritual thirst and hunger,  
on the other hand,  
can be affected by our will.**

4c

19

---

---

---

---

---

---

---

---

**REFERENCES:**

**Matthew 5:6**

**Psalm 42:1-2**

53

20

---

---

---

---

---

---

---

---

**REFERENCES:**

**Psalm 63:1**

**John 13:35**

54

21

---

---

---

---

---

---

---

---



**Unto the pure all things *are* pure:  
but unto them that are defiled  
and unbelieving *is* nothing pure;  
but even their mind  
and conscience is defiled.  
(Titus 1:15)**

55

22

---

---

---

---

---

---

---

---

- 1) Humility.**
- 2) Spirituality.**
- 3) Reality.**

56

23

---

---

---

---

---

---

---

---

**Blessed are ye,  
when *men* shall revile you,  
and persecute *you*,  
and shall say all manner of  
evil against you falsely,  
for my sake.  
(Matthew 5:11)**

57

24

---

---

---

---

---

---

---

---

**The realistic mind arrives at the conclusion that some aspects of human life are difficult at best.**

**Accepting this reality helps a person look at life with a measured view.**

58

25

---

---

---

---

---

---

---

---

**These things  
I have spoken unto you,  
that in me ye might have peace.  
In the world  
ye shall have tribulation:  
but be of good cheer;  
I have overcome the world.  
(John 16:33)**

59

26

---

---

---

---

---

---

---

---

**REFERENCES:**

**Romans 8:16-17**

5:

27

---

---

---

---

---

---

---

---

**Woe unto you, when all men  
shall speak well of you!  
for so did their fathers  
to the false prophets.  
(Luke 6:26)**

5;

28

---

---

---

---

---

---

---

---

**REFERENCES:**

**Matthew 26:59**

**Acts 5:40-41**

5<

29

---

---

---

---

---

---

---

---

**Jesus magnified  
the virtues of humility,  
love for our fellow man,  
purity of heart, and  
the great value of  
peacekeeping.**

63

30

---

---

---

---

---

---

---

---

**In today's world  
these principles  
continue to be a solid basis  
for true righteousness.**

64

31

---

---

---

---

---

---

---

---

**We must remember  
that true righteousness  
emanates from the heart.**

65

32

---

---

---

---

---

---

---

---

**CONCLUDING SCRIPTURE:**

**22 But the fruit of the Spirit is  
love, joy, peace,  
longsuffering, gentleness,  
goodness, faith,  
23 Meekness, temperance:  
against such there is no law.  
(Galatians 5:22-23)**

66

33

---

---

---

---

---

---

---

---

- 1) **Humility.**
- 2) **Spirituality.**
- 3) **Reality.**

67

34

---

---

---

---

---

---

---

---

**As we grow in God's Word,  
may we learn to live God's Word.**

68

35

---

---

---

---

---

---

---

---